International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 01, January - March, 2021, pp.239-244

भारतीय जीवन दर्शन में पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण से सम्बद्ध विभिन्न दृष्टिकोण

मोनिका कटारिया*

प्रस्तावना

मानव के समस्त क्रिया–कलाप पर्यावरण से ही प्रभावित होते हैं। मनुष्य स्वयं भौतिक पर्यावरण की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है, जिसके चारों ओर भी प्राकृतिक परिवेश का घेरा बना हुआ है। मानव अनादि काल से प्रकृति द्वारा प्रदत्त प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग व उपभोग करता रहा है। निरन्तर रूप से प्रयोग करने पर किसी पदार्थ की कमी या उसका समाप्त हो जाना स्वाभाविक ही है और यदि उसका पुनः निर्माण नहीं हो रहा है तो यह अन्त अवश्यम्भावी ही है। यही नहीं कुछ संसाधनों का अनियमित और अवैज्ञानिक शोषण प्रकृति के संतुलन में भी व्यवधान उपस्थित कर सकता है। अतः यह आवश्यक है कि जो संसाधन असीमित हैं, उन्हें कुशलतापूर्वक प्रयोग करें और उन्हें प्रदूषण से बचाऐं तथा जो संसाधन सीमित हैं, उनका उपयोग सावधानीपूर्वक और कम मात्रा में करें। प्रत्येक घटक दूसरे घटक से निकट रूप से सम्बन्धित हैं। एक का विनाश दूसरे के ह्रास का कारण बन सकता है। अतः इन सबको एक संपूर्ण घटक समुदाय के रूप में लेकर विचार करना आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित विभिन्न दृष्टिकोण

मानव स्वयं भी पर्यावरण का अभिन्न अंग है। उसके समस्त कार्य, विभिन्न स्थितियों में उसकी भूमिका, पर्यावरण संरक्षण हेतु उसके प्रयास आदि सभी का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित विभिन्न दृष्टिकोणों का निम्न बिंदुओं के अंतर्गत विवेचन किया जा सकता है –

- धर्म और पर्यावरण
- अर्थव्यवस्था और पर्यावरण
- राजनीति और पर्यावरण
- संस्कृति और पर्यावरण

इनका संक्षिप्त विवेचन निम्नानुसार है –

धर्म और पर्यावरण

भारत सहित विश्व के सभी मुख्य धर्म पर्यावरण संरक्षण और सुरक्षा हेतु अति संवेदनशील रहे हैं। इन सभी धर्मों में जल, वायु, आकाश, अग्नि, पेड़–पौधों आदि का उल्लेख मिलता हैं तथा इनके प्रयोग व उससे होने वाले लाभों का विवरण मिलता है। विभिन्न धर्मों में प्रकृति व प्राकृतिक संसाधनों की महत्ता का अवलोकन निम्न बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है –

- **हिंदू धर्म** – विश्व की कुल आबादी के लगभग 13 प्रतिशत हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। हिंदुओं के प्राचीन ग्रंथ वेद और उपनिषद हैं। इन ग्रंथों में अनेक जगहों पर प्रकृति और प्रकृति द्वारा प्रदत्त सभी वस्तुओं से गहरा जुड़ाव देखने को मिलता है। इन सभी को अत्यन्त पवित्र मानकर लोग इनकी पूजा करते हैं। इनके अनुसार आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी पाँच तत्व हैं, जिनसे समस्त प्राणियों को जीवन मिलता है और मृत्यु के पश्चात् देह इन्हीं पंचतत्वों में विलीन हो जाती है, अतः ये पंच तत्व ही उनके जीवन के आधार हैं।

* सहायक आचार्य एबीएसटी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान।

जल की महत्ता को हिंदू धर्म में इस सीमा तक स्वीकार किया गया है कि यदि कोई प्राणी किसी नदी में स्नान से पहले उसके जल को नमन करता है, मंत्रोच्चारण से स्नान के समय पूजा–अर्चना करता है और श्रद्धा से आचमन कर अपना जीवन धन्य समझता है, तो यह मान्यता है कि जल के स्पर्श मात्र से दैविक शक्ति उसकी रक्षा करती है। ऋग्वेद में कहा गया है कि ''आकाश के पानी, नदी और कुँओं के पानी, जिनका स्रोत सागर है, यह सब पवित्र पानी मेरी रक्षा करें।'' (ऋग्वेद, 7–4, 9–2) (स्रोत : World religions and Environement : Ed. O. P. Dwivedi)

वनस्पति व पेड़–पौधों की महत्ता को हिंदू धर्म में अत्यंत मान्यता दी गई है। विभिन्न पेड़ों को किसी न किसी देवी देवता से जोड़कर उनकी रक्षा करने का उपाय प्राचीन काल से ही किए गए हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से विभिन्न वृक्षों का जो महत्त्व वर्तमान समय में बताया जाता है वह पूर्व काल में अप्रत्यक्ष रूप से ही प्रचलन में था। वट वृक्ष को ब्रह्म, विष्णु और कुबेर, तुलसी को लक्ष्मी व विष्णु, सोम को चन्द्रमा, बेल को भगवान शिव, अशोक वृक्ष को इन्द्र, पीपल को विष्णु, गूलर को विष्णु और रुद्र, कदम्ब को कृष्ण, आम को लक्ष्मी आदि देवी–देवताओं से जोड़कर इनकी रक्षा का प्रयास किया जाता रहा है। 'वराह पुराण' में तो यहाँ तक कहा गया है कि ''एक व्यक्ति जो एक पीपल, एक नीम, एक बड़, दस फूल वाले पौधे अथवा लताएँ, दो अनार, दो नारंगी और पाँच आम के वृक्ष लगाता है, वह नरक में नहीं जाएगा।'' (वराह पुराण, 172.39) (स्रोत : World religions and Environement : Ed. O. P. Dwivedi)

पेड़–पौधों के साथ–साथ पशु–पक्षियों की रक्षा हेतु उनका पालन, भोजन खिलाना और उन पर अत्याचार की संभावना को समाप्त करने हेतु प्राचीन काल से ही हिंदू धर्म में व्यवस्था की गई है। हिंदू धर्म में अनेक पशु–पक्षियों को विभिन्न देवी देवताओं से जोड़ा गया है यथा– शेर को माँ दुर्गा से, कलहंस को ब्रह्म जी, हाथी व चूहे को श्री गणेश, हंस को माँ सरस्वती से, गरुड़ को भगवान विष्णु, घोड़े को सूर्य देव, मोर को कार्तिकेय, बन्दर को श्रीराम, आदि से जोड़कर इनकी रक्षा को सुनिश्चित करने का यत्न किया गया है।

- **बौद्ध धर्म** – बौद्ध धर्म भारत सहित विश्व के अनेक देशों में प्रचलित रहा है। विश्व की लगभग 8–10 प्रतिशत जनसंख्या बौद्ध धर्म की अनुयायी है। बौद्ध धर्म पर भारतीय संस्कारों का भी गहरा प्रभाव रहा है। इस धर्म में पर्यावरण प्रबन्ध एवं आवश्यकता के अनुकूल प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग पर बल दिया गया है। इस धर्म को मानने वाले लोग अहिंसा व सादगी पर बल देते हैं। वृक्ष लगाना, उनकी रक्षा करना एवं किसी जीव पर अत्याचार न करना इस धर्म की विशेषताऐं रही हैं।
- **जैन धर्म** – जैन धर्म के अन्तर्गत कुछ विशेष नियम बनाये गये हैं जिनके कठोरता से पालन पर बल दिया गया है। जैन धर्म में मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जैविक व अजैविक संसाधनों के न्यूनतम विनाश, सभी प्रकार की इच्छाओं से मुक्ति, मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन और समन्वय, अहिंसा आदि का विशेष महत्त्व है। ये सभी बातें पर्यावरण को किसी भी हानि से बचाने तथा उसे व्यवस्थित रखने के मंतव्य की सूचक है।
- **इस्लाम धर्म** – इस्लाम धर्म एक एकेश्वरवादी धर्म है। विश्व की लगभग 20 प्रतिशत जनसंख्या इस धर्म की अनुयायी है। इस्लाम के अनुसार एक ही सार्वभौमिक शक्ति 'खुदा' है, जिसके अनुसार संपूर्ण विश्व की समस्त क्रियाऐं चलती हैं। उनकी एकमात्र धार्मिक पुस्तक कुरान है। इस पुस्तक में इस धर्म के अनुयायियों को करने योग्य व न करने योग्य समस्त कार्यों के लिए निर्देशित किया गया है। इस धर्म के अनुसार ब्रह्मांड में प्रत्येक वस्तु का निर्माण खुदा ने किया है और उसी ने समस्त नियमों का निर्माण किया है, खुदा ने सभी वस्तुओं का एक निश्चित मात्रा में ही निर्माण किया है तथा प्रत्येक मनुष्य को आनुपातिक रूप से संतुलन को चलाना है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि इस्लाम में प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं के प्रति दृष्टिकोण व व्यक्तियों के आचरण व व्यवहार को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया गया है। कुरान में लिखा है–

''अल्लाह ने जो कुछ भी हमारे लिए बनाया है, उसके अपव्यय की सख्त मनाही है और इस्लाम में यह निषेध है।'' (स्रोत – कुरान 32, 17 : 27–28, प्राप्य : O.P. Dwivedi, Ed. Ibid, P.126)

पर्यावरण के प्रति इस्लाम का व्यापक दृष्टिकोण इस बात से भी पता चलता है कि इस्लाम मे संपूर्ण सृष्टि का एकमात्र स्वामी खुदा है तथा उस पर निवास करने वाले समस्त प्राणी मात्र न्यासी हैं।

- **सिख धर्म** – सिख धर्म के प्रवर्तक गुरुनानक देव जी ने प्रकृति को दैविक मान्यता दी है, इस कारण से सिख धर्म का दर्शन गहन रूप से प्रकृति से जुड़ा है। सिखों की पवित्र धार्मिक पुस्तक 'गुरू ग्रंथ साहिब' है, जिसके अनुसार ईश्वर स्वयं पर्यावरण में ही निहित है। इस पुस्तक में लिखा है कि सिख धर्म दुनिया की सभी वस्तुओं के ऊपर प्राकृतिक नियम, पशु और पक्षी, मौसम, वन–वनस्पति और वन्य जीव को महत्त्व देता है। इन सबके ऊपर सृष्टि रचियता प्रमुख है।

इसके अतिरिक्त 'गुरू ग्रन्थ साहिब' में अनेक स्थानों पर 'पौधे और वनस्पति', 'पशु और पक्षी', तथा 'वर्षा और ऋतुओं' का वर्णन मिलता है, जो निश्चित ही पर्यावरण की सुरक्षा के लिए है। प्रकृति असंतुलन के सम्बन्ध में इस धर्म में चेतावनी स्वरूप कहा गया है कि प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने से सम्पूर्ण व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो जायेगी। इन सभी बातों के द्वारा यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि प्रकृति और अनुष्य के मध्य संतुलन सृष्टि का अविभाज्य अंग है।

- **ईसाई धर्म** – ईसाई धर्म के विश्व में सर्वाधिक अनुयायी हैं। विश्व में इस धर्म के लगभग 32 प्रतिशत अनुयायी हैं। इस धर्म का पूर्व इतिहास 'यहूदी–ईसाई आचार संहिता' के नाम से जाना जाता है, जिसमें प्रकृति को महत्त्व व मान्यता तो प्रदान की गई, परन्तु उसे मनुष्य के अधीन रखा गया। इसके पीछे संभवतः उनकी यह विचारधारा रही होगी कि व्यक्ति मूलतः पृथ्वी के अन्य जीवों से भिन्न हैं तथा वे स्वयं अपनी नियति के स्वामी होने के कारण अपने लक्ष्य चुन सकते हैं और उनकी प्राप्ति के लिए आवश्यकतानुसार सीख सकते हैं। इसी कारण उनका मत था कि पृथ्वी और आकाश के मध्य प्राकृतिक संसाधन और ऊर्जा मानव के प्रयोग के लिए बने हैं। कुछ वस्तुएँ अन्तहीन हैं। उनका खुलकर उपयोग करें व जो सीमित हैं उनके समाप्त होने पर उनके विकल्प विज्ञान और तकनीकी सहायता से तैयार किए जा सकते हैं। उनका विचार रहा कि मनुष्य हर प्रकार से श्रेष्ठ है। अतः उसका प्रकृति पर प्रभुत्व बना रहेगा। प्रकृति वस्तुतः मानव जाति के कल्याण और प्रसन्नता के लिए ही बनी है।

परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब पश्चिमी राष्ट्रों में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई और प्राकृतिक संसाधनों के अकुशल व अव्यवस्थित प्रयोग से लोगों का जीवन संकटग्रस्त होने लगा, तब से ईसाई धर्म की विचारधारा में भी परिवर्तन होने लगा और इस प्रकार के विचार सम्मुख आने लगे कि पर्यावरण का ह्रास जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है तथा प्रकृति की समाप्ति मानव जाति की समाप्ति है। इस संदर्भ में मनुष्य और प्रकृति दोनों की नियति को एक–दूसरे का समापक माना जाने लगा। और वर्तमान में ईसाई धर्म, जिसके अनुयायी संपूर्ण विश्व में फैले हुए हैं, पश्चिमी देशों की संस्कृति की नवीनतम विचारधारा से प्रभावित है। प्रदूषण को रोकने के लिए हरित क्रांति जैसे अभियान चला रहे हैं और मनुष्य के कल्याण के लिए पर्यावरण संरक्षण का समर्थन कर रहे हैं।

पोप पौल षष्टम का 'मानव पर्यावरण सम्मेलन', 1972 (स्टॉक होम : स्वीडन) में भेजे गये संदेश से यह बात और अधिक प्रमाणित होती है –

''पर्यावरण और संसाधन सभी के लिये हैं, यह सभी के लिए अहस्तान्तरणीय सम्पत्ति हैं, और ऐसी कोई सार्वभौमिक सम्पत्ति और विवेकशील प्रभुसत्ता नहीं है जो आज और कल मानव जाति को उत्तरदायित्व से मुक्त कर सके।'' (Source : India's Environment, Crisis and Responses, Chapter 10, Environment in India's Religious and Cultural Heritage by B.V. Krishanamurti and Urs Schoettli, Ibid. P. 163)

- **पारसी धर्म** – पारसी धर्म का प्रारम्भ ईसा से 660 वर्ष पूर्व (660 B.C.) से माना जाता है और यह मीडिया, जो अब ईरान में समाहित है, वहाँ से 8वीं शताब्दी में भारत में स्थापित हो गया। अच्छा और बुरा, ये दो भावनाएँ इस धर्म की मुख्य धार्मिक भावनाऐं रही हैं। इस धर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को 'अच्छा' पाने के लिए संघर्ष करना चाहिए।

पर्यावरण के विषय में पारसी धर्म ने शुरूआत से ही अपने अनुयायियों को आस्था की शिक्षा प्रदान की है। पारसी धर्म के ग्रन्थों में पृथ्वी, जल, अग्नि, वनस्पति, खनिज और पशु छः वस्तुओं का उल्लेख मिलता है। इन सबको वे मान्यता देते हैं और पूजते हैं। इन सब में अग्नि को अधिक प्रधानता प्रदान की गई है। पवित्रता इस धर्म का मूलमंत्र है और इस धर्म के अनुयायी प्राकृतिक संसाधनों में किसी भी प्रकार की अपवित्रता सहन नहीं करते हैं।

अर्थव्यवस्था और पर्यावरण

पर्यावरण संरक्षण में आर्थिक पक्ष की भी महती भूमिका हैं। इसे निम्न बिंदुओं के अंतर्गत स्पष्ट किया जा सकता है–

- पर्यावरणीय लागत की तुलना में मौद्रिक लागत को अधिक महत्त्व दिया जाता है। हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए हम पर्यावरण को कम महत्ता प्रदान करते हैं। हम एक नया मकान तो बनाना चाहते हैं, परंतु उसे अच्छे वातावरण में रखने हेतु कोई व्यय नहीं करना चाहते। इसी प्रकार हम सरकारी स्तर पर अच्छी सड़कों का निर्माण तो चाहते हैं, परंतु उसे सुंदर बनाने हेतु वृक्षों व अन्य व्यवस्थाओं हेतु व्यय को टालने की चेष्टा करते हैं। पर्यावरण संरक्षण हेतु आर्थिक पक्ष को सामने लाकर 'मूल्य और लाभ' की बात प्रस्तुत की जाती है।
- कुछ देश किसी भी संसाधन को प्रचूर मात्रा में रखते हैं। ऐसे संसाधनों की विश्व में अच्छी माँग होने के कारण वे इस बात का अनुचित लाभ उठाते हैं। इराक, इरान और तेल भंडार वाले राष्ट्र इसके उदाहरण है। इन देशों ने अपनी शर्तों पर संसार के अनेक छोटे राष्ट्रों को या तो इन संसाधनों के महरूम कर दिया था उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय बना दी, जिसका अप्रत्यक्ष प्रभाव वहाँ के पर्यावरण पर भी पड़ा है।
- प्रत्येक देश के पास अपने कुछ संसाधन होते हैं, जिनका उपयोग वह अपने देश के निवासियों के लिए करता है, लेकिन अन्य जरूरतें पूरी करने हेतु वह दूसरे देशों पर निर्भर होता है। सक्षम राष्ट्र इस स्थिति का लाभ उठाकर अपनी सामग्री अन्य देशों को कुछ विशेष शर्तों पर उपलब्ध करवाते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर राष्ट्र अपने पर्यावरण की कीमत पर जरूरी वस्तएँ जुटाता है। उदाहरण के तौर पर कई अफ्रीकी देशों ने अनाज खरीदने के लिए अपने जंगल बेच दिए और फिर ये देश वनों के अभाव में स्थायी रूप से अकाल की चपेट में आ गये। इस प्रकार की स्थितियों में पर्यावरण संरक्षण की सोच का पनपना अत्यंत मुश्किल होता है।
- पर्यावरण प्रदूषण का सर्वाधिक प्रभाव कच्ची बस्तियों आदि में रहने वाले आर्थिक रूप से कमजोर अथवा कम आय वाले परिवारों पर ही पड़ता है। जल सम्बन्धी अनेक बीमारियाँ अधिकांशतः इन्हीं लोगों को होती हैं। फैक्ट्रियों आदि से होने वाले वायु प्रदूषण से भी वे ही श्रमिक अधिक प्रभावित होते हैं जो कि उनमें कार्य करते हैं उनके तथा वहीं पास के मकानों में निवास करते हैं। जल संकट, ऊर्जा संकट व अन्य पारिस्थितिकी विषमताओं का शिकार भी ऐसे लोग ही होते हैं।

यह सत्य है कि सुदृढ़ आर्थिक संरचना के अभाव में किसी भी समाज के लिए विकास करना अत्यंत कठिन है परन्तु इस हेतु पर्यावरण की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः यह आवश्यकता है कि यदि कभी राष्ट्र के आर्थिक विकास और पर्यावरण के मध्य कोई द्वंद्व उत्पन्न हो तो इस पर विवेकपूर्ण तरीके से विचार किया जाये तथा इस प्रकार के वैकल्पिक उपाय खोजे जाने चाहिए जिनसे पर्यावरण की उपेक्षा किए बिना हम विकास के पथ पर अग्रसर हो सकें।

राजनीति और पर्यावरण

पर्यावरण की विभिन्न समस्याऐं, चाहें वे स्थानीय स्तर पर हों, राष्ट्रीय स्तर पर हों अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हों, अन्ततः संपूर्ण विश्व को प्रभावित करती हैं। स्मोग घटना और मिनिमाटा घटना जैसी घटनाओं ने संपूर्ण विश्व को चिंतित कर दिया। सभी देश इस बात से सिद्धान्ततः सहमत हैं कि एक देश की पर्यावरणीय घटना का प्रभाव दूसरे देशों पर अवश्य पड़ता है। इसलिए विश्व में इस विचार का आरम्भ हुआ कि 'विश्व स्तर पर सोचो और स्थानीय स्तर पर कार्य करो।'

किसी भी राष्ट्र की स्थितियों के बारे में विचार करने, उस पर अधिकारिक रूप से कार्य करने तथा नीति–निर्धारण करने का दायित्व जन नेताओं का है जो कि उस राष्ट्र के लोगों के कल्याण हेतु चुनाव द्वारा सरकार की विधानसभा, संसद आदि में भेजे जाते हैं। यह सशक्त व अधिकार युक्त अभिकरण पर्यावरण संरक्षण हेतु ऐसी व्यवस्थाऐं व कानून बना सकती है, जिससे पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याऐं तुलनात्मक रूप से कम की जा सकें। भारत के संविधान में ऐसे कई उल्लेख हैं, जिनके अनुसार जनता को पर्यावरण संबंधी समस्याओं से बचाकर उन्हें अच्छा जीवन प्रदान करना सरकार का दायित्व बताया गया है। संसद ने पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए अनेक कानून बनाये हैं, लेकिन उन कानूनों व व्यवस्थाओं को मजबूती से लागू करने की महती आवश्यकता है।

विश्व के अनेक देशों ने अपने–अपने स्तर पर पर्यावरणीय कानून और व्यवस्थाऐं बनाई हैं, जिससे वे अपने देश को प्रदूषण रहित बनाने में सक्षम हुए हैं। बैटरी संचालित वाहन, सौर ऊर्जा का अधिकाधिक प्रयोग, औद्योगिक संस्थानों से शून्य स्तर पर धुआँ उत्सर्जन, प्रदूषण रहित पैट्रोल आदि पर्यावरण संरक्षण में लगे हुए देशों की कतिपय उपलब्धियाँ हैं। परन्तु यह सब तभी सम्भव हो पाया हैं जब उस देश के राजनीतिज्ञों का इस हेतु सम्बल और अभिप्रेरणा रही है।

संस्कृति और पर्यावरण

प्रत्येक राष्ट्र के रीति–रिवाज, वहाँ का रहन–सहन, वेशभूषा, विभिन्न परम्पराऐं और त्यौहार, स्मारक, ऐतिहासिक धरोहर, कला, उद्योग–धंधे आदि मिलकर वहाँ की संस्कृति का निर्माण करते हैं। संस्कृति का किसी राष्ट्र के निवासियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह उन्हें पर्यावरण के साथ प्रेम और सहयोग, पशु–पक्षियों के प्रति दयालुता, प्राकृतिक साधनों की सुरक्षा, मैत्री भाव और गुणवत्तापूर्ण जीवन की प्रेरणा देती है।

भारत देश ऋषि–मुनियों का देश रहा है, जहाँ लोग पूर्ण रूप से प्रकृति पर ही आश्रित थे। कन्द–मूल, फल का भोजन, नदियों व झरनों का शुद्ध पानी, पहाड़ों पर योग–तपस्या में लीन लोग प्रकृति प्रेमी थे। समय के साथ बदलाव तो हुए लेकिन मूल संस्कृति पर पर्यावरण का प्रभाव बना रहा। वृक्षों की पूजा–अर्चना, विभिन्न पशु–पक्षियों को पूजना, सूर्य को जल अर्ध्य, ये सब उसी के उदाहरण हैं। विश्व प्रसिद्ध प्राचीन शिक्षण संस्थान यथा नालन्दा विश्वविद्यालय, शांति निकेतन आदि सघन जंगलों की छाया में बसाये गये। विभिन्न तीर्थ स्थल यथा रामेश्वर, द्वारका, प्रयाग आदि नदियों व सागरों के किनारे बसाये गये। महान विचारक यथा महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, योगी अरविन्द, स्वामी परमहंस आदि की कर्मभूमि भी प्रकृति प्रधान ही रही। गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, ताप्ती आदि नदियाँ सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्वीकार की गई। इनके अपने महत्व ने इन्हें भारतीय संस्कृति का रूप ही प्रदान नहीं किया बल्कि देश के पर्यावरण संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में एक अलौकिक पहचान भी दी है।

उपसंहार

भारतीय दर्शन और संस्कृति अत्यंत समृद्ध और अद्वितीय हैं। हमारे भारतीय जीवन दर्शन के मूल में पर्यावरण व प्रकृति के संरक्षण के मौलिक सिद्धांत निहित हैं। प्रकृति प्रदत्त प्राकृतिक संसाधनों का न्यूनतम और आवश्यकता के अनुसार उपभोग हमारे जीवन दर्शन की विशेषता है। भारत में प्रचलित कमोबेश सभी धर्मों में पर्यावरण चेतना और संरक्षण की व्यवस्थाओं की व्याख्या की गयी है। कालान्तर में विकास की होड़ में मानव ने प्रकृति की उपेक्षा प्रारंभ कर दी और पर्यावरण को नष्ट करने के आत्महन्ता मार्ग पर चल पड़ा। विकास की इस अंधी दौड़ ने आज संपूर्ण मानव जाति को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इस विनाश से बचने के लिए हमें पुनः अपनी जड़ों की तरफ लौटना होगा। प्रकृति की रक्षा और इस भूमि पर जीवन की रक्षा के लिए पुनः भारतीय जीवन दर्शन को अपनाने की वर्तमान में महती आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण की सभी प्राचीन परम्पराओं की पुनर्स्थापना करके एवं जनसाधारण में जागरूकता व चेतना उत्पन्न करके ही हम पर्यावरण को बचाने में सक्षम हो सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

~ डॉ. एम. के. गोयल, पर्यावरण शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2014

~ डॉ. एम. के. पाण्डेय, भारतीय दर्शन में पर्यावरण चेतना, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 2011

~ Dr. Renu Tanwar, Environment Conservation in Ancient India, IOSR-JHSS, Vol. 21, Issue 9, Ver. 11, Sept. 2016

~ Our Planet, Our health, Report of the WHO Commission on Health and Environment, Geneva, 1992

~ Pandey G.N., Environment Management, Vikas Publishing House Pvt. Ltd. 1997.

~ पुरोहित, श्याम सुंदर, पर्यावरण शिक्षा (द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण) बीकानेर : अजन्ता बुक्स, 1991

~ Sonia, Environmental Protection in Ancient religion system, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, Vol. 16, Issue No. 4, March 2019.

~ https://www.pravakta.com/importance-of-environment-in-indian-culture/

~ https://m-hindi.indiawaterportal.org.

❖◆❖